

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परै  
सो जनु उधरनहार ॥  
संत की निंदा नानका  
बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥  
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥  
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥  
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥  
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥  
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥  
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥  
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥  
संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥  
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै

॥१॥

संत के दूखन ते मुखु भवै ॥  
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥  
संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥  
संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥  
संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥  
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥  
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥  
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥  
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥  
नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि  
॥२॥

संत का निंदकु महा अतताई ॥  
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥  
संत का निंदकु महा हतिआरा ॥  
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥  
संत का निंदकु राज ते हीनु ॥  
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥  
संत के निंदक कउ सरब रोग ॥  
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥  
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥  
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु  
॥३॥

संत का दोखी सदा अपवितु॥  
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥  
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥  
संत के दोखी कउ सभु तिआगै ॥  
संत का दोखी महा अहंकारी ॥  
संत का दोखी सदा बिकारी ॥  
संत का दोखी जनमै मरै ॥  
संत की दूखना सुख ते टरै ॥  
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥  
नानक संत भावै ता लए मिलाइ

॥४॥

संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥  
संत का दोखी कितै काजि न पहुँचै ॥  
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥  
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥  
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥  
जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥  
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥  
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥  
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥  
नानक संत भावै ता लग उबारि

॥५॥

संत का दोखी इउ बिललाइ ॥  
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥  
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥  
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥  
संत का दोखी छुटै इकेला ॥  
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥  
संत का दोखी धरम ते रहत ॥  
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥  
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥  
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ  
॥६॥

संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥

संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥

संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥

संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥

संत के दोखी की पुजै न आसा ॥

संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥

संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥

जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥

पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥

नानक जानै सचा सोइ

॥७॥



सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥  
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥  
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥  
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥  
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥  
जैसा करे तैसा को थीआ ॥  
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥  
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥  
जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥  
बडभागी नानक जन सेइ  
॥८॥१३॥